6

भविष्य के लिए शान्ति

(यूहन्ना 14)

''ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं। परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा। मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे। तुम ने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आया हूं: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो। मैं अब से तुम्हारे साथ बहुत बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं। परन्तु यह इसलिए होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं: उठो, यहां से चलें''
(आयतें 25-31)।

अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले गुरुवार रात को अटारी वाले कमरे में प्रेरितों के साथ यीशु ने उनसे तसल्ली की बातें की जिससे उन्होंने अपने ऊपर आने वाले अंधकार के लिए तैयार होना था। ये बात चीत उनके लिए अत्यन्त महत्व की थी और टिकाऊ भी, जैसे हमारे लिए भी है। हम उन शिक्षाओं को कैसे सम्भालते हैं जो उसने उन्हें उनके ''साथ रहते हुए'' (14:25) उन्हें दी थीं! उन्हें उसकी बातें उन आवश्यकताओं पर सर्चलाइट की तरह चमकती लगती हैं जब हम अपने आगे आने वाले हर कल के लिए रास्ता बनाते हैं।

आत्मा का नेतृत्व

प्रेरितों के काम के लिए अगुआई आवश्यक है। यीशु ने उन्हें समझाया कि पिता उनकी सहायता के लिए पवित्र आत्मा को भेज रहा है। पवित्र आत्मा के विषय में यह नये नियम की सबसे बड़ी प्रतिज्ञाओं में से एक है। यह संक्षेप में इस बात का वर्णन करता है कि पवित्र आत्मा ने क्या करना है। यीशु ने कहा, ''परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा'' (14:26)। पिता इस सहायक अर्थात पैराक्लेट (*paraklētos*) को यीशु के नाम में भेजने वाला है। उसका उद्देश्य मसीह के काम को महिमा देना और बढ़ाना था। उसने दो महत्वपूर्ण तरीकों से अर्थात नये प्रकाशनों के द्वारा उन्हें ''सब बातें'' सिखाकर और जो कुछ यीशु ने उन्हें पहले सिखाया था उसे याद दिलाकर, प्रेरितों की सहायता करनी थी। उसने उस नींव पर बनाने में जो

मसीह ने पहले रखी थी, प्रेरितों की अगुआई करनी थी।

पवित्र आत्मा का आना हमारे लिए भी दिया गया। प्रेरितों और परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लेखकों के द्वारा पवित्र आत्मा ने हमें पवित्र शास्त्र दिया। पिन्तेकुस्त के दिन स्वर्ग से प्रेरितों के ऊपर पवित्र आत्मा बहाया गया। आत्मा की उपस्थिति में इस बपतिस्मे से प्रेरितों को संसार में परमेश्वर की इच्छा प्रगट करने, अन्य मसीही लोगों को आश्चर्यकर्म करने के दान देने और पुष्टि के लिए आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी। उसके उनके साथ रहने में जो कुछ प्रेरितों के लिए पवित्र आत्मा था, वही वह हमारे लिए है जब हम परमेश्वर के वचन में उसके प्रकाशन की सामर्थ और सच्चाई में रहते हैं।

शान्ति की खामोशी

स्वाभाविक है कि ऐसे अन्धकार भरे भविष्य की राह देखते हुए प्रेरित अपने मनों में शान्ति की खोज में थे। यीशु ने कहा, ''मैं तुम्हें इसे दूंगा।'' ''मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे'' (14:27क)। शान्ति उलझन और गड़बड़ी के बीच स्थिरता है। यीशु ने इन लोगों को धैर्य दिए बिना नहीं छोड़ना था। यह शान्ति जो उसने उन्हें दी वह सच्चाई की शान्ति थी, अर्थात वह स्थिरता जो इस बात को जानने से मिलती है कि क्या हो रहा है। उसने उन्हें यह शान्ति न केवल अपनी विदाई से पहले अपनी बातों के द्वारा दी, बल्कि अगले दिनों में उनके साथ अपनी उपस्थिति के द्वारा भी दी। ''तुम से सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि 'मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आया हूं''' (14:28क)। उन्होंने शीघ्र ही एक आत्मिक उपस्थिति के रूप में मसीह को जान लेना था। बाद में उसने उनके साथ एक नये तरीके से होना था।

जो शान्ति वह छोड़ रहा था और वह शान्ति जिसे उसने देना था वैसी शान्ति नहीं है जो संसार की ओर से मिलती है। संसार जो शान्ति देता है वह केवल हानि या परेशानी से मुक्ति है, और यह बार-बार ऐसी शान्ति नहीं दे सकता। ऐसी शान्ति केवल तभी मिलती है जब सब परिस्थितियां सही हों और कई बार तो तब भी नहीं। प्रेरितों को यीशु की शान्ति गड़बड़ी के दौरान ही मिलनी थी।

यीशु आज भी लोगों को शान्ति देता है। वह अपने चेलों को शान्ति देता है। यह शान्ति वह तब देता है जब हम विश्वास और आज्ञापालन में उसके पास आते हैं! बाद में परीक्षाओं के हमें परेशान करने पर वह हमें अपनी उपस्थिति के द्वारा नई शान्ति देता है। प्रेरितों ने मसीह की शारीरिक संगति के बिना आने वाले भविष्य को देखा। इस आकृति ने उन्हें कम्पा दिया! उनका संसार टूटी हुई आशाओं और निराश करने वाली योजनाओं के ढेर में ढहता हुआ लगा। उनके परेशान मन शान्ति के लिए पुकार उठे और यीशु ने उन्हें शान्ति दी। उसने कहा, ''तुम्हारा मन न घबराए और न डरे'' (14:27ख)। वह समझा रहा था, ''मैं भविष्य के बारे में सब कुछ जानता हूं। मैं जानता हूं कि इसमें क्या होने वाला है और मैं इसमें तुम्हारी अगुआई करूंगा।''

विश्वास का भरोसा

भविष्य ने विश्वास के लिए भी पुकारा। बड़ी-बड़ी बातें हो रही थीं पर प्रेरितों को उनका

अर्थ समझना था। यीशु ने उन्हें बताया,

> तुम ने सुना, कि मैं ने तुम से कहा, कि मैं जाता हूं, और तुम्हारे पास फिर आया हूं: यदि तुम मुझ से प्रेम रखते, तो इस बात से आनन्दित होते, कि मैं पिता के पास जाता हूं क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो (14:28, 29)।

सच्चा विश्वास मसीह की बातों पर पक्का होता है (रोमियों 10:17)। यह केवल उन्हें ही मिलता है जो उसकी बातों को सुनते, उन्हें मानते और भरोसे और प्रेम में उन पर कार्य करते हैं।

व्यक्तिगत रूप में प्रेरित जिन्होंने मसीह की बातों को माना था, उनसे मसीह की विदाई में आनन्द हो सकते थे। वे संसार के लिए परमेश्वर की बड़ी योजना के एक और चरण में उसके प्रवेश होने पर आश्वस्त हो सकते थे। वह पिता के पास लौट रहा था। पृथ्वी की अपनी सेवकाई को पूरा करने की अपने पिता की इच्छा को पूरी करने के बाद, उसने पिता के दाहिने हाथ अपना स्थान ग्रहण करके सनातन मंशा को जारी रखना था। प्रेरित उन्हें कहे गए उसके शब्दों से इस विदाई को मान गए थे। उसने उन्हें आश्वस्त किया, ''और मैं ने अब इस के होने से पहिले तुम से कह दिया है, कि जब वह हो जाए, तो तुम प्रतीति करो'' (14:29)।

हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना और इन प्रेरितों के लिए कितना जमीन हिला देने वाला अनुभव हो सकता है। इस बड़ी त्रासदी को ध्यान में रखते हुए, यीशु ने हमें बताया:

> मैं अब से तुम्हारे साथ बहुत बातें न करूंगा, क्योंकि इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं। परन्तु यह इसलिए होता है कि संसार जाने कि मैं पिता से प्रेम रखता हूं, और जिस तरह पिता ने मुझे आज्ञा दी, मैं वैसे ही करता हूं: उठो, यहां से चलें (14:30, 31)।

यीशु के इन बातों के कहते हुए भीड़ शैतान अर्थात ''संसार के हाकिम'' के चलाए इकट्ठी हो रही थी। उसकी पेशियां, कोड़े मारे जाना और मृत्यु होने में केवल कुछ घण्टे थे।

यीशु ने प्रेरितों को याद दिलाया कि सबसे बड़े युद्ध का चरम निकट आ रहा है। अपने आपको क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए देकर, निर्दोष मसीह ने क्रूस को एक वेदी में बदलकर संसार के पापों के लिए बलिदान का मेमना बन जाना था। इन घटनाओं के लिए यीशु की पहुंच से हर किसी को उस प्रेम का पता चलना था जो उसके मन में पिता के लिए था। उसने पहले अपने पिता की इच्छा के प्रति समर्पित होने के कारण क्रूस के लिए अपने आपको दे दिया। उसे अपने पिता से एक आज्ञा मिली थी, और वह उसे मानने को दृढ़संकल्प था।

सारांश

इन प्रेरितों से जो कुछ यीशु कह रहा था इस रविवार की रात अधिकतर बातें उनके मनों में स्पष्ट नहीं थीं; पर घटनाओं के बाद जिसने उसकी भविष्यवाणी की थी उन्हें याद आना समझ आना और विश्वास होना था। जो कुछ यीशु ने कहा था वह सब पूरा होने वाला था।

भविष्य में देखना हमेशा उलझाने वाली बात रही है; पर भविष्य में झांकना विशेषकर जिसमें तूफ़ान के बाद झूल रहे हों विशेषकर परेशान करने वाला होता है। यीशु ने अपने प्रेरितों को आने वाले अंधकार के दिनों को उस अगुआई के साथ देखने के लिए कहा जो पवित्र आत्मा द्वारा मिलनी थी, वह शान्ति जिसे वह देता है और वह विश्वास जो उसकी बातों से बनता है। हमारे लिए भी वह ऐसा ही करता है अपने सब चेलों के लिए उसने आत्मा का नेतृत्व, शान्ति की स्थिरता और विश्वास का भरोसा दिया है। आइए हम उसकी शान्ति को सुनें, समझें, विश्वास करें और ग्रहण करें।

''क्या हम बाइबल खोलकर यह कहें, 'यीशु [2000] वर्ष पूर्व रहा; ... वह जीवित रहा, ... वह बातें करता था, वह मर गया'? ... अध्यापक, व्याकरणवेत्ता और ग्रंथी का यही तरीका है। ... हमें चाहिए कि उन पन्नों को यह देखने के लिए नहीं कि मसीह किसी समय क्या था बल्कि यह देखने के लिए कि वह आज क्या है खोलें और पढ़ें। वह ईश्वरीय जीवनी अर्थात ईश्वरीय [डायरी] से निकाले गए चुनिन्दा पन्नों का भाग है। वह आज भी वैसा ही है जैसा कालांतर के कल में था। उसके लिए एक हज़ार वर्ष एक दिन जैसा है; इसलिए इतिहास की गणना करना उसके लिए बीत जाने वाले कल की सवेर ही है, क्योंकि लोगों ने उसके मुंह को देखा और उसकी आवाज़ को सुना। जो लोग सुसमाचार को पढ़ते हैं उनके लिए वह किसी भी ताज़ा समाचार पत्र की तरह ही है।''[1]

टिप्पणी

[1]एफ. बी. मेयर, द *गॉस्पल ऑफ़ द किंग* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1949) 31–32.